Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 5

कांग्रेस प्रणाली चुनौतियाँ और पुर्नस्थापना

भाग - 2

Satyaveer Yadav

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

शास्त्री जी का कार्यकाल (1964–1966)

- देश के सामने बड़ी चुनौतियां
  - मानसून की असफलता
    - खाद्यान्न का गंभीर संकट
  - भारत–चीन युद्ध से उत्पन्न हुई कठिनाईयां
  - 1965 में पाकिस्तान के साथ युद्ध
- 10 जनवरी 1966 को ताशकंद में अचानक देहांत

शास्त्री जी का नारा

'जय जवान जय किसान'

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

दुबारा राजनीतिक उत्तराधिकार का सवाल

मोरारजी देसाई

केन्द्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री पद पर भी रहें।

बंबई प्रांत के मुख्यमंत्री पद पर रह चुके थे।

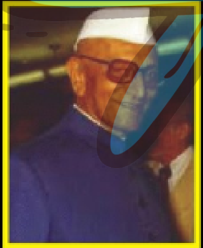

बड़े नेताओं ने इंदिरा गांधी को समर्थन देने का मन बनाया।

सर्वसहमति कायम ना हो सकी।

गुप्त मतदान

इंदिरा गांधी विजयी

इंदिरा गांधी

जवाहरलाल नेहरू की बेटी

कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर रह चुकी।

शास्त्री के मंत्रिमंडल में सूचना मंत्रालय का प्रभाव

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

इ. गांधी – [1966 — 77, 1980 — 84] → भारत की 1st महिला pm

→ आयरन लेडी

– पुस्तक – The years of challange

– राज्यसभा से pm

अब तक (04)

↓

"गुंगी गुड़िया"

मोरारजी देसाई

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

अब आगे :-

1967 के चुनाव → 4th L.S

- नए प्रधानमंत्री को जमने में लगा थोड़ा वक्त।
- कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने संभवतः ये सोचकर इंदिरा गांधी का समर्थन किया कि प्रशासनिक और राजनीतिक मामलों में खास अनुभव न होने के कारण समर्थन और दिशा निर्देशन के लिए इंदिरा गांधी उन पर निर्भर रहेंगी।
- प्रधानमंत्री बनने के एक साल के अंदर इंदिरा गांधी को लोकसभा के चुनावों में पार्टी की अगुवाई करनी पड़ी।
- इस वक्त तक भारत की आर्थिक स्थिति और भी खराब हो चली।
- इन कठिनाइयों के बीच पार्टी पर अपना नियंत्रण बढ़ाने और नेतृत्व कौशल दिखाने की इंदिरा गांधी ने कोशिश की।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan® LET'S LEARN TOGETHER

चुनावों का संदर्भ

- दो प्रधानमंत्रियों का जल्दी जल्दी देहावसान
- नए प्रधानमंत्री को पद संभाले अभी एक वर्ष भी पूर्ण नहीं साथ ही इस प्रधानमंत्री को राजनीतिक लिहाज से कम अनुभवी माना गया।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

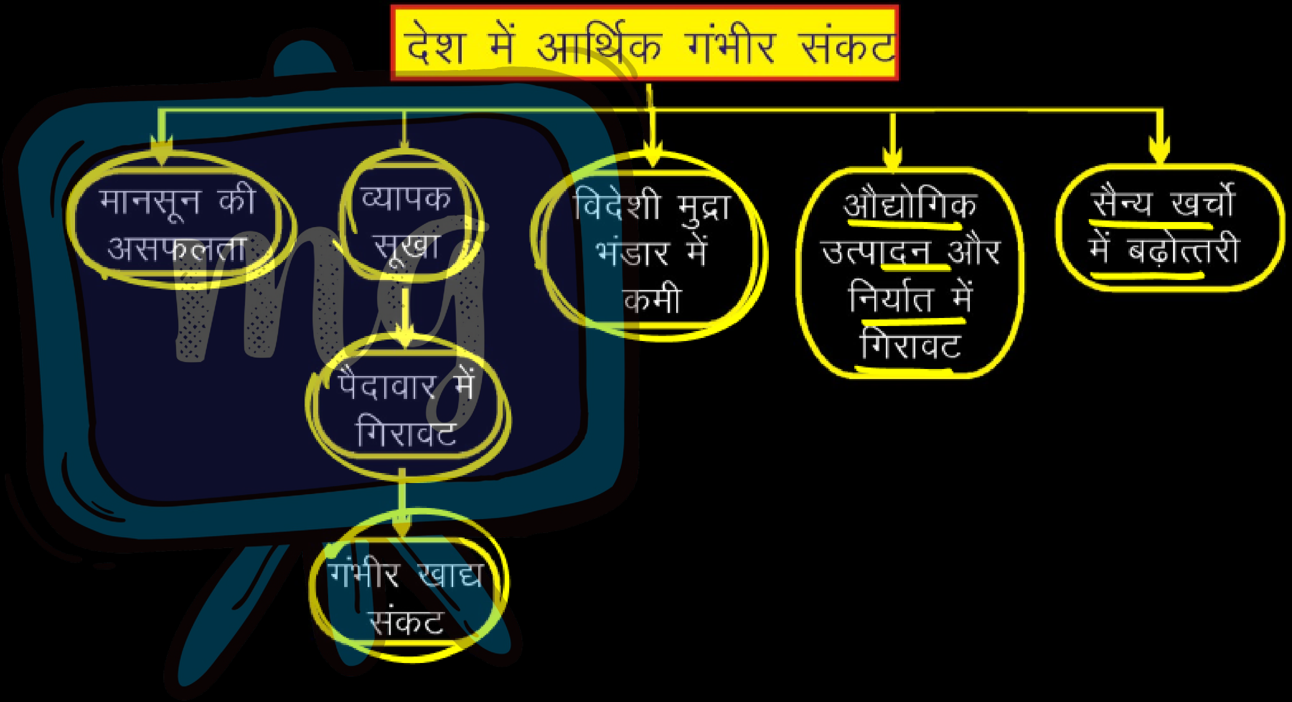

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- देश की विकट आर्थिक स्थिति।
- इंदिरा गांधी सरकार के शुरूआती फैसलों में एक रूपये का अवमूल्यन करना।
- पहले 1 अमरीकी डॉलर की कीमत 5 रूपये जो अब बढ़कर हो गयी = 7 रूपये।
- आर्थिक स्थिति की विकटता के कारण कीमतों में तेजी से इजाफा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1 — 5
7

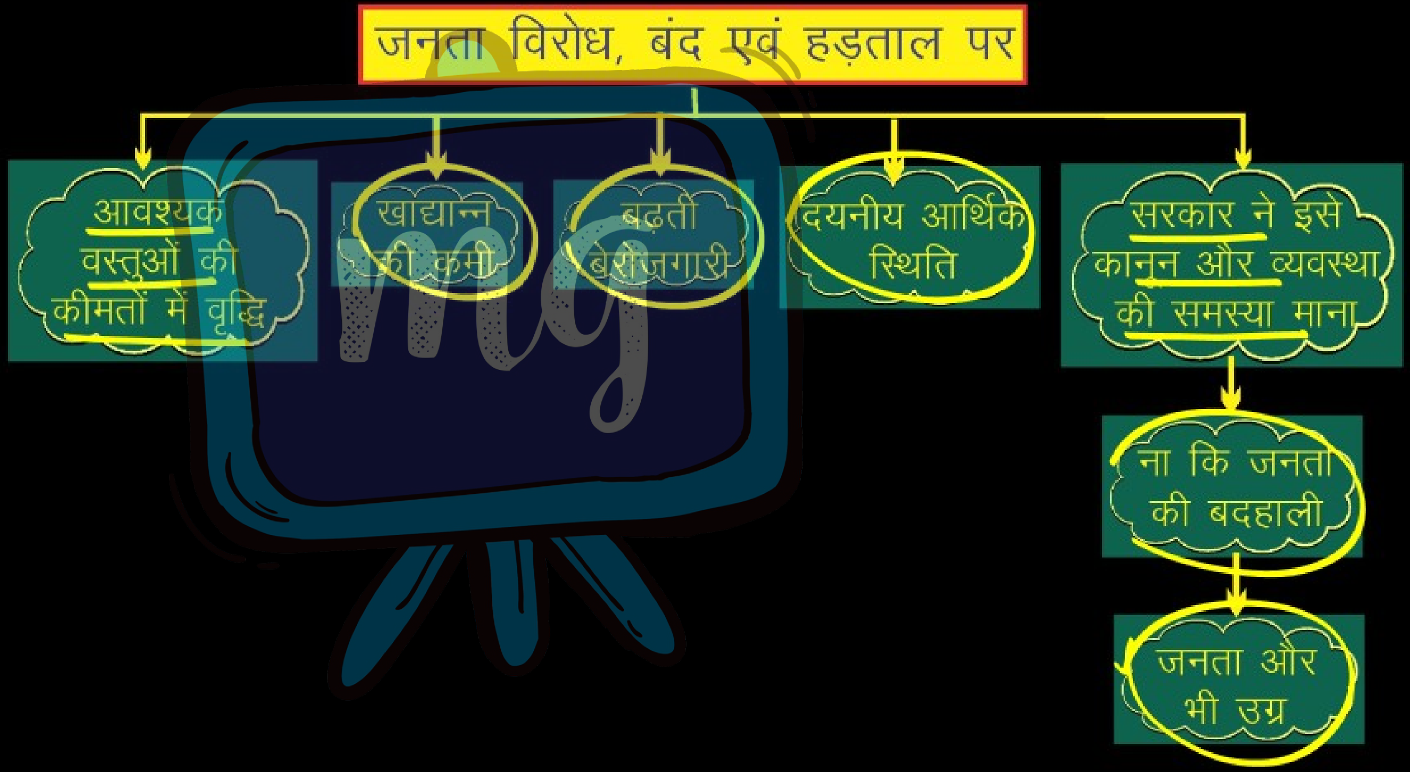

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- साम्यवादी और समाजवादी पार्टी ने व्यापक समानता के लिए संघर्ष छोड़ दिया।
- मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी से अलग हुए साम्यवादियों के एक समूह ने मार्क्सवादी - लेनिनवादी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी बनाई और सशस्त्र कृषक विद्रोह का नेतृत्व किया।
- इस पार्टी ने किसानों के बीच विरोध को संगठित किया।
- इसी अवधि में गंभीर किस्म के हिंदु -मुस्लिम दंगे।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

गैर-कांग्रेसवाद

- विपक्षी दल उठ रहे जनविरोध की अगुवाई कर रहे थे।
- कांग्रेस की विरोधी पार्टियों ने महसूस किया कि उनके वोट बंट जाने के कारण ही कांग्रेस सत्तासीन है।

अलग–अलग विचारधारा
अलग–अलग कार्यक्रम

- अन्य राज्यों में सीटों के मामले में चुनावी तालमेल किया।
- कुछ राज्यों में कांग्रेस विरोधी मोर्चा
- सभी दल एकजुट

ये रणनीति गैर–कांग्रेसवाद

राममनोहर लोहिया

राम मनोहर लोहिया → समाजवादी

गैर-कांग्रेसवाद → दक्षिणपंथी, वामपंथी

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

- समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया ने इस 'गैर-कांग्रेसवाद' के पक्ष में सैद्धांतिक तर्क दिये।
- कांग्रेस का शासन अलोकतांत्रिक और गरीब लोगों के हितों के खिलाफ।
- इसलिए गैस कांग्रेसी दलों को एक साथ आना जरूरी।
- ताकि गरीबों के हक में लोकतंत्र को वापस लाया जा सकें।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

चुनावों का जनादेश

फरवरी 1967 में चौथे आम चुनाव

- नेहरू के बिना पहली बार कांग्रेस का सामना
- चुनाव परिणाम में राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर कांग्रेस को धक्का
  - इंदिरा गांधी के मंत्रिमंडल के आधे मंत्री चुनाव हारे
  - जैसे–तैसे लोकसभा में बहुमत लेकिन प्राप्त सीटों एवं मतों के प्रतिशत में भारी कमी
  - 7 राज्यों में बहुमत नहीं मिला
  - दो अन्य राज्यों में दल–बदल के कारण कांग्रेस की सरकार नहीं बनीं
  - ये 9 राज्य देश के हर भाग में कायम
- राजनीतिक भूकंप की संज्ञा

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

शास्त्री की मृत्यु के बाद

- मोरार जी
  - वरिष्ठ नेताओं का समूह (सिंडीकेट)
- इ. गांधी
  - खाद्यान्न संकट
  - 2-युद्ध का भार - सैन्य खर्च
  - आर्थिक विकास में कमी → रुपया का अवमूल्यन
    - 1 — 5 रु
    - 1 — 7 रु
  - गैर-कांग्रेसवाद → राममनोहर लोहिया

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1st गैर-कांग्रेसी सरकार
केरल - कम्युनिस्ट पार्टी
→ द्रविड़ मुनेत्र कड़गम
17 Sep. 1949
संस्थापक - C.N. अन्नादुरै
वर्तमान अध्यक्ष - M.K. स्टालिन

एक विचित्र अनुभव

- ‘मद्रास प्रांत’ में एक क्षेत्रीय पार्टी द्रविड़ मुनेत्र कड़गम पूर्ण बहुमत के सत्ता पाने में कामयाब रही। (DMK)
- द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (छस्त्र) हिंदी विरोधी आंदोलन का नेतृत्व कर सत्ता में आई।
- यहां के घात हिंदी को राजभाषा के रूप में केन्द्र द्वारा अपने ऊपर थोपने का विरोध कर रहे थे।
- चुनावी इतिहास में पहली घटना जब किसी गैर कांग्रेसी दल को किसी राज्य में पूर्ण बहुमत मिला।
- आठ अन्य राज्यों में विभिन्न गैर- कांग्रेसी दलों की गठबंधन सरकारी बनी।
- लोग कांग्रेस को सत्तासीन देखने के अभ्यस्त थे - उनके लिए ये एक विचित्र अनुभव।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

100
51
5
30
29
20
20
20